३

मोहन राकेश कृत आधे-अधूरे नाटक (शीर्षक के विशेष संदर्भ में)

डॉ. राजेंद्रसिंह चौहाण

सहयोगी प्राध्यापक, स्तानक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, बलभीम महाविद्यालय, बीड.

प्रस्तावना

आधुनिक युग में समाज के बदलते प्रवाह को अभिव्यक्त करने के लिए अनेक गद्य विधाओं का जन्म हो रहा है। जिसमें उपन्यास, कहानी, नाटक, आत्मकथा, जीवनी, निबंध, एकांकी आदि का उल्लेख विशेषरुप से किया जा सकता है। इस गद्य विधाओं में नाट्य विधा को अधिक सफलता प्राप्त हो रही है, क्योंकि यह विधा दृश्य-श्राव्य है। जिस कारण नाटककार रंगमंच के माध्यम से शिक्षित तथा अनपढ व्यक्ति के हृदय को स्पर्श कर अपनी भावनाओं, विचारों, को समाज तक सम्प्रेषित करता है।

हिंदी के नाट्य विषयक शोध एवं आलोचनात्मक ग्रंथों में नाटक की सफलता, कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, देश-काल वातावरण, भाषा एवं शैली, उद्देश और रंगमंचीयता इन नाट्य तत्वों के आधार पर होती है। इन तत्वों के आधार पर नाटकों का अध्ययन, विचार विमर्श करते समय यह प्रश्न बार-बार मेरे सामने उपस्थित होता रहा कि नाटक की सर्वांगपूर्णता के लिए इन सभी तत्वों का होना अनिवार्य है ही, लेकिन इन तत्वों के होने से नाटक सर्वांगपूर्ण नहीं बनता। तो नाटक की सर्वांगपूर्णता के लिए नाटक के महत्वपूर्ण अंग के रुप में 'शीर्षक' का होना भी अनिवार्य है। अत: शीर्षक के बिना नाटक सर्वांगपूर्ण हो ही नहीं सकता।

मोहन राकेश कृत आधे-अधूरे नाटक के शीर्षक का मूल्यांकन

'आधे-अधूरे' मोहन राकेश द्वारा ई.स. 1969 में लिखा गया नाटक है। सामाजिक विषय को कथानक का आधार बनाकर लिखे गये इस नाटक में मनुष्य की टूटन, बिखराव की अभिव्यक्ति, हुई है। व्यक्ति, परिवार, समाज में सर्वत्र अधूरापन दिखाई देता है।

'आधे-अधूरे' यह शीर्षक भावना प्रधान है, जिसमें 'अधूरेपन' की भावना का बोध होता है। समाज में आज कोई भी व्यक्ति परिपूर्ण नहीं है। उसमें कुछ न कुछ कमी है ही। इसी उद्देश के साथ मोहन राकेश जी ने इस नाटक का शीर्षक 'आधे-अधूरे' रखा है। जो अधिक ही अर्थपूर्ण प्रतीत होता है।

'आधे-अधूरे' इस नाटक में सभी पात्र किसी-न-किसी रुप में 'आधे अधूरे' ही है। इस नाटक का कोई पात्र ऐसा नहीं है, जो आधा-अधूरा नहीं है। इसलिए इस अधूरेपन की पूर्ति करने के लिए वह हमेशा प्रयत्नशील रहते हैं। फिर भी कोई भी पात्र अपने प्रयत्न में सफल नहीं हो रहा है यही इस नाटक की सबसे बड़ी त्रासदी है।

'आधे-अधूरे' इस नाटक में प्रमुख पात्र के रुप में सावित्री है, जो नारी पात्र है। और उसका पति महेंद्रनाथ है। अपने बाईस साल के दाम्पत्य जीवन में उन्हें दो लडकियाँ है। बडी बिन्नी और छोटी किन्नी। और एक लडका 'अशोक'।

सावित्री अपने जीवन में दो प्रकार का अधूरापन महसूस करती है। एक अधूरापण यह है कि वह अपने जीवन में सदैव धन का अभाव महसूस करती है और दूसरा अधूरापन यह है कि वह किसी भी पुरुष के संपर्क में अपनी अतृप्त ईच्छा की पूर्ति का अनुभव

Scanned by CamScanner